بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

इ़रफ़ानुल क़ुरआन

तरजुमा

शैख़ुल इस्लाम डॉ. प्रॉ. मुहम्मद ताहिरुल क़ादरी

मिन्हाजुल क़ुरआन इन्टरनेशनल इन्डिया

© जुम्ला हुक़ूक़ ब-हक़्क़े मुतरजिम महफ़ूज़ हैं।

ब-ख़त्ते हिन्दी इशाअ़ते अव्वल

19 फरवरी 2011

ता'दादे इशाअ़त : 3000

मिन्हाजुल क़ुरआन इन्टरनेशनल इन्डिया

उमज रोड़, मुक़ाम पोस्ट : करजन
ज़िला' वडोदरा -391240
गुजरात, इन्डिया

+91-2666-232533 Mob. : 09898963623, 09725621001
website : www.minhaj.in
Email : minhaj.gujarat@gmail.com

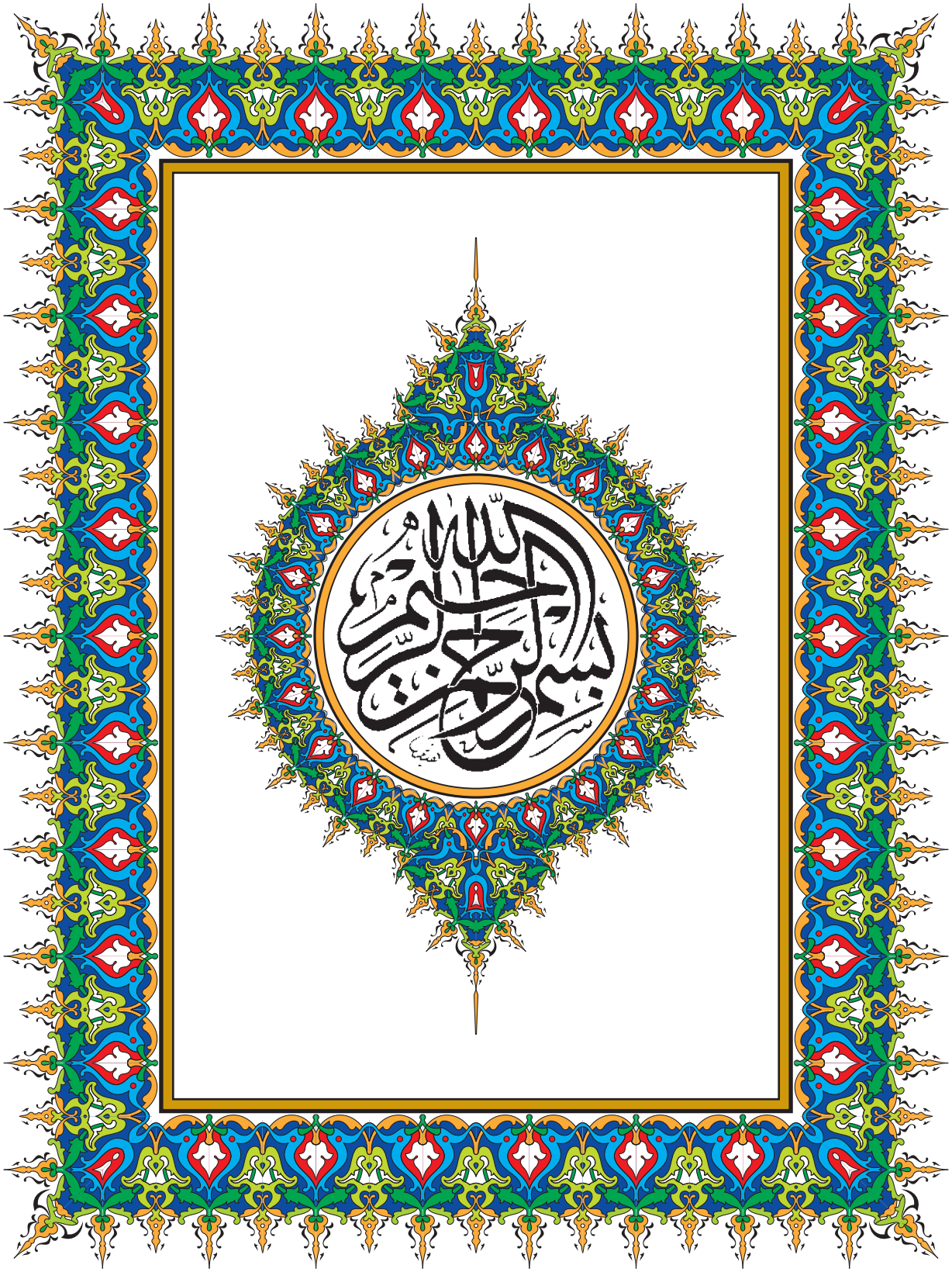
بسم الله الرحمن الرحيم

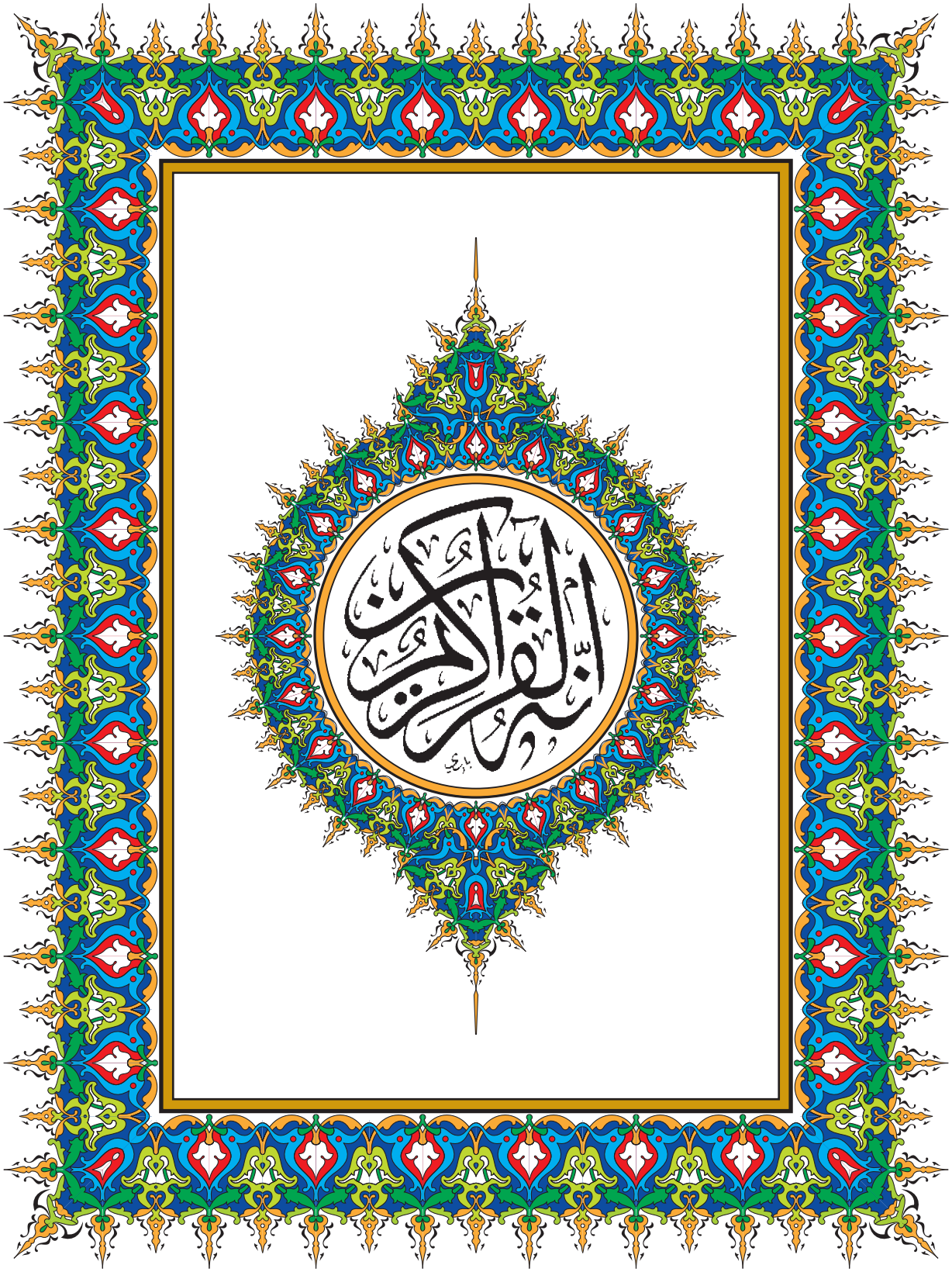
القرآن الكريم

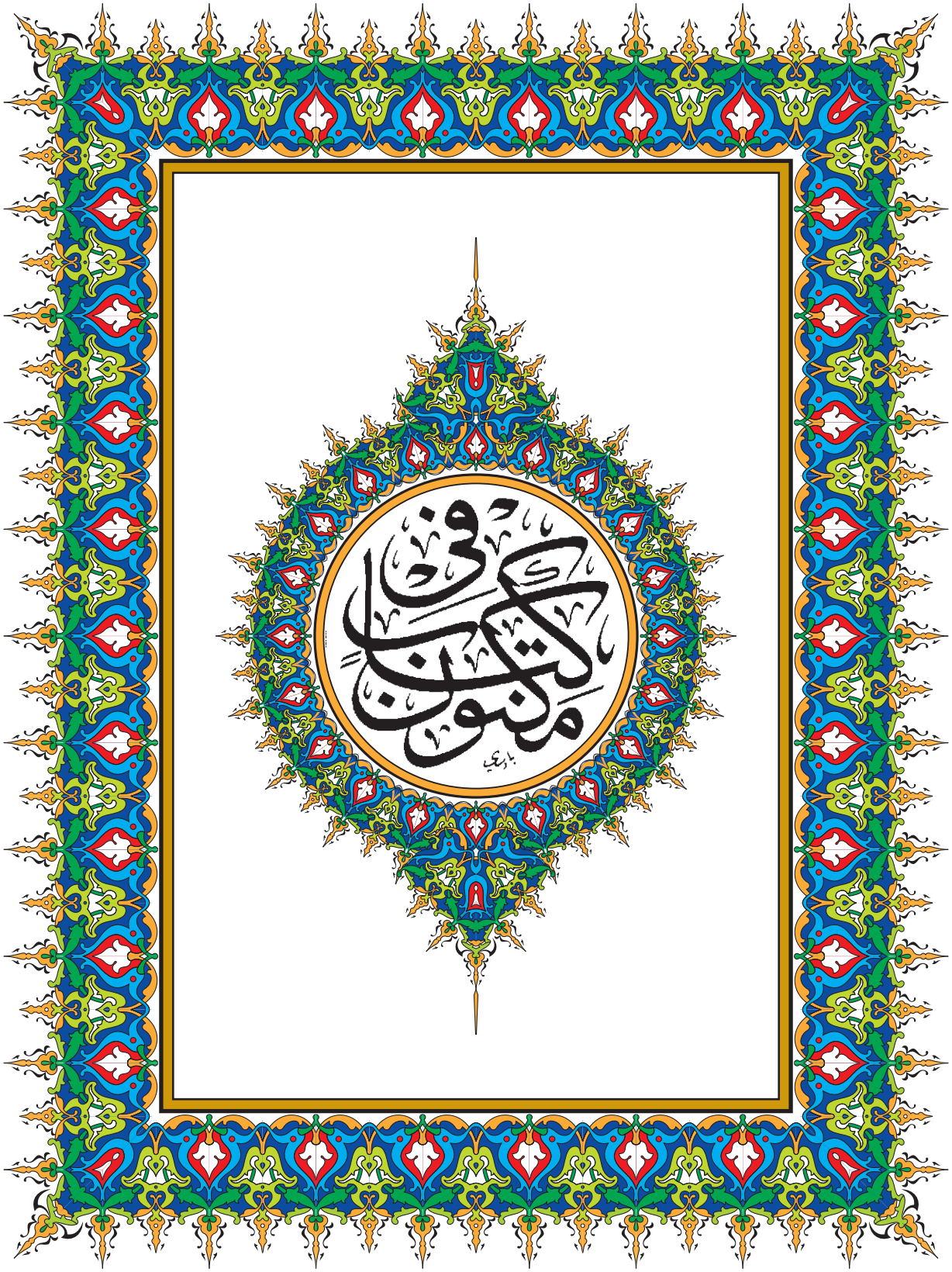

في كتاب مكنون

आयातुहा 7 | 1 सू-रतुल फ़ातिह़ति मक्किय्यतुन 5 | रुकूउ़हा 1

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ۙ﴿۱﴾

1. सब ता'रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जो तमाम जहानों की परवरिश फ़रमानेवाला है।

الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ۙ﴿۲﴾

2. निहायत महरबान बहुत रह़म फ़रमानेवाला है।

مٰلِكِ يَوۡمِ الدِّيۡنِ ؕ﴿۳﴾

3. रोज़े जज़ा का मालिक है।

اِيَّاكَ نَعۡبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ ؕ﴿۴﴾

4. (अय अल्लाह !) हम तेरी ही इ़बादत करते हैं और तुझ ही से मदद चाहते हैं।

اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ ۙ﴿۵﴾

5. हमें सीधा रास्ता दिखा।

صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ ۙ﴿۶﴾

6. उन लोगों का रास्ता जिन पर तू ने इन्आ़म फ़रमाया।

غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ وَ لَا الضَّآلِّيۡنَ ﴿۷﴾

7. उन लोगों का नहीं जिन पर ग़ज़ब किया गया है और न (ही) गुमराहों का।

ع

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

الٓمّٓ ﴿١﴾

1. अलिफ़ लाम मीम (ह़क़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं।)

ذٰلِكَ الۡكِتٰبُ لَا رَيۡبَ ۛۚ فِيۡهِ ۛۚ هُدًى لِّلۡمُتَّقِيۡنَ ﴿٢﴾

2. (येह) वोह अ़ज़ीम किताब है जिस में किसी शक की गुन्जाइश नहीं, (येह) परहेज़गारों के लिए हिदायत है।

الَّذِيۡنَ يُؤۡمِنُوۡنَ بِالۡغَيۡبِ وَيُقِيۡمُوۡنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقۡنٰهُمۡ يُنۡفِقُوۡنَ ﴿٣﴾

3. जो ग़ैब पर ईमान लाते और नमाज़ को (तमाम हुक़ूक़ के साथ) क़ाइम करते हैं और जो कुछ हम ने उन्हें अ़ता किया है उस में से (हमारी राह में) ख़र्च करते हैं।

وَالَّذِيۡنَ يُؤۡمِنُوۡنَ بِمَآ اُنۡزِلَ اِلَيۡكَ وَمَآ اُنۡزِلَ مِنۡ قَبۡلِكَ ۚ وَبِالۡاٰخِرَةِ هُمۡ يُوۡقِنُوۡنَ ؕ ﴿٤﴾

4. और वोह लोग जो आप की तरफ़ नाज़िल किया गया और जो आप से पहले नाज़िल किया गया (सब) पर ईमान लाते हैं' और वोह आख़िरत पर भी (कामिल) यक़ीन रखते हैं।

ع ١